International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(III), October - December, 2023, pp. 111-114

अलवर जिले के परंपरागत जल स्त्रोतों की दयनीय स्थिति व उनके प्रबंधन की आवश्यकता

जयकृष्ण शर्मा*

सार

सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद के काल स`जल को पंच महाभूतों में सम्मिलित किया गया है। अर्थात् मानव जीवन का सृजन करने वाले पंच महाभूतों में से एक जल को माना गया। देवताओं ने जिस अमृत पेय की कल्पना की थी. सम्भवतः वह जल ही है क्योंकि इसके बिना जीवन सम्भव नहीं है। इसलिए कहा गया है कि जल है तो जीवन है।'' इत्यादि उपमाओं को श्रृंगार किया गया है। ऐसे अमृत पेय का, जो प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है परन्तु सीमित मात्रा में है, हम निर्ममता स`जल दोहन कर रहे है। बिना विचार अपव्यय करे रहे है। जड़ व्यक्ति की भांति उसमें तरह–तरह के रसायन तथा गन्दगी मिला रहे है। यद्यपिज ल में एक सीमित मात्रा तक अपना परिशोधन करने की शक्ति है। इसके पश्चात् जल पूर्णतः मानव एवं समस्त जगत के लिए विष के समान हो जाता हैं। परन्तु जल में हमारे असीमित दुर्व्यवहार को झेलने की शक्ति नही है। फलस्वरूप ये नदियाँ जिनकी कल–कल धाराये सृष्टि की अनंनता की परिचायक थी।

शब्दकोशः *परम्परागत जल स्त्रोत, जल दोहन, उपमाओं का श्रृंगार अमृत पेय, जल संसाधन, राजस्थान में भूजल स्थिति, अलवर में भूजल स्थिति, अलवर जिले में जल संरक्षण की दिशा में प्रयास।*

प्रस्तावना

वर्तमान में अपने स्वरूप व शुद्धता को खोकर अस्तित्व का संघर्ष कर रही है। हमारे अत्याचारों व अंधविश्वासों ने उनमें इतना अधिक विष घोल दिया है कि उन नदियों के आस–पास के क्षेत्र का भूमिगत जल भी प्रदूषित हो रहा है। यदि शीघ्र ही हम नहीं चेते तो अपनी भावी पीढ़ी को सती अनुसुइया की भांती यह आर्शीवाद नही दे सकेंगें–

''अचल रहे अहिवात तुम्हारा, जब तक गंग जमुन जल धारा '' अर्थात यह दृष्टि तब तक ही है, जब तक गंगा व जमुना में जल धारा है।

प्रस्तुत शोध एक छोटा सा प्रयास है जो कलयुग में गंगा व अन्य नदियों तथा जल को पृथ्वी पर बचा सके जिसमें विभिन्न स्त्रोतों से विचारो से एक संग्रह है जिसमें सभी क्षेत्रों सम्मिलित किया गया है। जल के बिना भविष्य की कल्पना भी नही की जा सकती है। जल ना केवल महत्वपूर्ण तत्व है, बल्कि प्राणी जगत के लिए जीवन दाता भी है। यहीं शोध में प्रस्तुत किया गया है जिसमें परम्परागत स्त्रोंतों से लेकर वर्तमान की परिस्थितियों का विस्तार पूर्वक उल्लेख है।

जल को बचाना, उसका उचित उपयोग तथा उपलब्ध जल को शुद्ध बनायें रखने के प्रयासों का वर्णन किया गया हैं एवं इसी का शोधार्थी के शोध कार्य में प्रस्तुतिकरण है।

• शोधार्थी, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।

जल है तो जीवन है।'' इत्यादि उपमाओं का श्रृंगार किया गया है। ऐसे अमृत पेय का, जो प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है परन्तु सीमित मात्रा में है हम निर्ममता से जल दोहन कर रहे है। बिना विचारे अपव्यय कर रहे है। जड़ व्यक्ति की भांति उसमें तरह–तरह के रसायन तथा गन्दगी मिला रहे है। यद्यपि जल में एक सीमित मात्रा तक अपना परिशोधन करने की शक्ति है। इसके पश्चात् जल पूर्णतः मानव एवं समस्त जगत के लिए विश्व के समान हो जाता है। परन्तु जल में हमारे असीमित दुर्व्यवहार को झेलने की शक्ति नही है। फलस्वरूप ये नदियाँ जिनकी कल–कल धारायें सृष्टि की अनंतता की परिचायक थी।

जल संसाधन पानी के वह स्त्रोत है जो मावन के लिए उपयोगी हो या जिनके उपयोग की सम्भावना हो। पानी के उपयोगों में शामिल है कृषि, औद्योगिक, घरेलू, मनोरंजन हेतु और पर्यावरणीय गतिविधियों में। वस्तुतः इन सभी मानवीय उपयोगों में से ज्यादातर में ताजे जल की आवश्यकता होती है। पृथ्वी पर पानी की कुल उपलब्ध मात्रा अथवा भण्डार को जलमण्डल कहते है। पृथ्वी के इस जल मण्डल का 97.5'' भाग समुद्रों में खारे जल के रूप में है और केलव 2.5'' ही मीठा पानी है, उसका भी दो तिहाई हिस्सा हिमनद और ध्रुवीय क्षेत्रों में हिम चादरों और हिम टोपियों के रूप में जमा है। शेष पिघला हुआ मीठा पानी मुख्यतः जल के रूप में पाया जाता है, जिसका केवल एक छोटा सा भाग भूमि के ऊपर धरातलीय जल के रूप में या हवा में वायु मंडलीय जल के रूप में है।

अध्ययन क्षेत्र

अलवर भारत के राजस्थान प्रान्त का एक शहर है। यह नगर राजस्थान के मेवात अंचल के अन्तर्गत आता है। दिल्ली के निकट होने के कारण यह राष्टीय राजधानी क्षेत्र में शामिल है।

राजस्थान की राजधानी जयपुर से करीब 160 किमी. की दूरी पर है। अलवर अरावली की पहाड़ियों के मध्य में बसा है। अलवर का प्राचीन नाम 'शाल्वपुर' था। चार दीवारी और खाई से घिरे इस शहर में एक पर्वत श्रेणी की पृष्टभूमी के सामने शंक्काकार छन्द की पहाड़ी पर स्थित बाला किला इसकी विशिष्टता है। 1775 में इसे अलवर रजवाड़े की राजधानी बनाया गया था। वर्तमान में अलवर राजस्थान का महत्वपूर्ण औद्योगिक नगर है तथा अठवाँ बडा नगर है। अलवर को राजस्थान का सिंह द्वार भी कहते है।

जल प्रबंधन की आवश्यकता

- जल प्रबन्धन देश में कृषि की बेहतरी के लिये कुशल सिंचाई पद्धतियों को विकसित करने में मदद करता है।
- जल संसाधन सीमित है और हमें उन्हें अगल पीढ़ी के लिये भी बचाकर रखना है। तथा यह उचित जल प्रबन्धन के अभाव में संभव नही हो सकता है।
- जल प्रबन्धन प्रकृति और मौजूदा जैव विविधता को चक्र को बनाए रखने में मदद करता है।

जल प्रबंधन के प्रमुख तरीके

- **अपशिष्ट जल प्रबन्धन प्रणाली**

उपयुक्त सीवेज सिस्टम साफ और सुरक्षित तरीके से अपशिष्ट जल के निपटान में मदद करते है। इसमें गंदे पानी को रिसाइकिल किया जाता है। और उसे प्रयोग करने योग्य बनाया जाता है ताकि उसे वापस लोगों के घरो में पीने और घरेलू कार्यो में इस्तेमाल हेतु भेजा जा सके।

- **सिंचाई प्रणालियाँ**

सूखा प्रभावित क्षेत्रों में फसलों के पोषण के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली सिंचाई प्रणाली सुनिश्चित की जा सकती है। इन प्रणालियों को प्रबंधित किया जा सकता है। ताकि पानी बर्बाद न हो और अनावश्यक रूप से पानी की आपूर्ति को कम करने से बचने के लिये इसके पुनर्नवीनीकरण या वर्षा जल का भी उपयोग कर सकते है।

- **प्राकृतिक जल निकायों की देखभाल करना**

झीलों, नदियों और समुद्रों जैसे प्राकृतिक जल स्त्रोत काफी महत्वपूर्ण है। ताजे पानी के परिस्थिति की तंत्र और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र दोनों ही विभिन्न जीवों की विवधता का घर है। और इन पारिस्थितिक तन्त्रों के समर्थन के बिना ये जीव विलुप्त हो जाएंगें।

- **जल संरक्षण**

देश में जल संरक्षण पर बल देना आवश्यक है और कोई भी इकाई (चाहे वह व्यक्ति हो या कोई कम्पनी) अनावश्यक रूप से उपकरणों के प्रयोग को कम कर रोजाना कई गैलन पानी बचा सकता है।

नीति आयोग की @75 कार्यनीति और जल प्रबन्धन

- वर्ष 2018 में नीति आयोग ने अभिनव भारत @75 के लिए कार्य नीति जारी की थी जिसके तहत यह निश्चित किया गया था की वर्ष 2022–23 तक भारत की जल संसाधन प्रबन्धन रणनीति में जीवन, कृषि, आर्थिक विकास, पारिस्थितिकी और पर्यावरण के लिये पानी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु जल सुरक्षा की सुविधा होती चाहिए।
- नागरिको और पशुओं के लिए स्वच्छता हेतु पर्याप्त और सुरक्षित पेयजल प्रदान कराना।
- सभी खेतों में उचित सिंचाई व्यवस्था सुनिश्चित करना (हर खेत को पानी) और कृषि जल उपयोगिता में सुधार करना।
- **गंगा औ**र उसकी सहायक नदियों की अविरल और निर्मल धारा सुनिश्चित करना।

जल संरक्षण के छोटे व आसान तरीके

- घर के लॉन को कच्चा रखे।
- घर के बाहर सड़को के किनार कच्चा रखे अथवा लूज स्टोन पेंवमेन्ट का निर्माण करे।
- पार्कों में रिचार्ज ट्रेन्च बनाई जाये।

किसानों द्वारा जल संरक्षण के उपाय

- फसलों की सिंचाई क्यारी बनाकर करे।
- सिंचाई की नालियों को पक्का करें।
- बागवानी की सिंचाई हेतु ड्रिप विधि व फसलों हेतु स्प्रिंकलर विधि अपनाये।
- बगीचों में पानी सुबह ही दे जिससे वाष्पीकरण से होने वाला नुकसान कम किया जा सके।
- जल की कमी वाले क्षेत्रों में ऐसी फसलें बोयें जिसमें कम पानी की आवश्यकता हो।
- अत्यधिक भू–गर्भ जल गिरावट वाले क्षेत्र ने फसल चक्र में परिवर्तन कर अधिक जल खपत वाली फसल ने उगाई जायें।
- खेतों की मेडो को मजबूत व ऊँचा खेत का पानी खेत में रिचार्ज होने दे।

उद्योग एवं व्यावसायिक क्षेत्र में जल संरक्षण

- औद्योगिक प्रयोग में लाये गये जल का शोधन करके उसका पुनः उपयोग करे।
- मोटर गैराज में गाड़ियों की धुलाई से निकलने वाले जल की सफाई करके पुनः प्रयोग में लाये।
- वाटर पार्क और होटल में प्रयुक्त होने वाले जल का उपचार करके बार–बार प्रयोग में लायें।
- होटल, नीजि अस्पताल, नर्सिंग होम्स आदि में वर्षा जल का संग्रहण कर टॉयलेट, बागवानी में प्रयोग में लाये।

जल संरक्षण के सरकारी प्रयास

- 300 वर्गमीटर से अधिक क्षेत्रफल के निजी मकानों एवं 200 वर्ग मीटर सरकारी/ गैर सरकारी ग्रुप से अधिक क्षेत्रफल के हाउसिंग मकानों, सभी सरकारी इमारतों में रूफ टॉप रेन हार्वेस्टिंग की व्यवस्था करना अनिवार्य किया गया है।
- जहाँ–जहाँ रेन हार्वेस्टिंग की व्यवस्था की गई है उनके प्रभावी अनुरक्षण का कार्य।
- तालाबों व पोखरों की नियमित डिसिलिटिंग का कार्य।
- कक्षा 5–6 व अन्य कक्षाओं में रेन वाटर हार्वेस्टिंग विषय को पाठयक्रम में सम्मिलित करना।

जल संरक्षण के प्रति सरकारी प्रयासों एवं हमारी जागरूकता ही भू–गर्भ जल के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। एवं विलुप्त होते भू–गर्भ जल स्तर को पुनर्जीवित कर सकता है।

निष्कर्ष

वर्तमान जल संकट को देखते हुए देश विदेश में हर मंच पर जल संरक्षण की चर्चा होने लगी है। विभिन्न सरकारों द्वारा इसके लिए योजनाबद्ध ढंग से काम भी किए जा रहे है। परन्तु यह एक विश्वव्यापी समस्या है, एक सामाजिक संकट है, इसका समाधान शीघ्रातिशीघ्र करने की आवयकता है। इस कार्य को एक सामाजिक अभियान बनाने का समय आ चुका है। इसमें जन–जन का सहयोग अपेक्षित है। जल संकट की समस्या के समाधान के लिए जल संरक्षण ही एक मात्र विकल्प रह जाता है जिससे जल की उपलब्धता की निरंतरता को सुनिश्चित किया जा सकता है।

जल संरक्षण कीजिए, जल जीवन का सार।
जल न रहे यदि जगत में, जीवन है बेकार।।

यद्यपि उपर्युक्त उपाय पर्याप्त नही है। तथापि इनके द्वारा जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल आवश्य की जा सकती है। यदि समाज का हर एक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी निभाने लगे तो जल संरक्षण को बल मिलेगा। अतः समाज के एक जागरूक अंग होने के नाते हम सब का कर्तव्य है कि जल संरक्षण को हर स्तर पर प्रोत्साहित करे ताकि वर्तमान जल संकट की समस्या का समाधान संभव हो सके।

जल पृथ्वी का सर्वाधिक मूल्यवान संसाधन है और हमें न केवल अपने लिए इसकी रक्षा करनी है बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी इसे बचाकर रखना है। वर्तमान समय में जब भारत के साथ–साथ सम्पूर्ण विश्व जल संकट का सामना कर रहा है तो आवश्यक है कि इस ओर गम्भीरता से ध्यान दिया जाये। भारत में जल प्रबन्धन अथवा संरक्षण सम्बंधी नीतियां मौजूद है, परन्तु समस्या उन नीतियों के कार्यान्वयन के स्तर पर है। अतः नीतियों के कार्यन्वयन में मौजूद शिथिलता को दूर कर उनके बेहतर क्रियान्वयन को सुनिश्चित किया जाना चाहिये जिससे देश में जल के कुप्रबंधन की सबसे बड़ी समस्या को संबोधित किया जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान में जल संसाधन, डॉ. मोहन लाल गुप्ता, शुभदा प्रकाशन, जोधपुर
2. जल संकट समस्या और समाधान, डॉ. विजय कुमार वर्मा, अविष्कार पब्लिकेशन, जयपुर
3. अलवर जिले का भूजल अध्ययन एक शोध कार्य, डॉ. विजय कुमार वर्मा
4. जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भू जल विभाग, राजस्थान
5. मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान, राजस्थान
6. दैनिक भास्कर न्यूज चैनल जून 2015
7. राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र मई जून 2015

❖◆❖